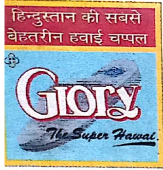
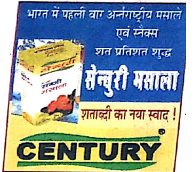


हिन्दुस्तान

पटना, दिल्ली और लखनऊ से प्रकाशित



वर्ष 15 ● अंक 108 ● मिथिलांचल ● पृष्ठ 18 ● पटना, शनिवार, 25 नवम्बर, 2000 ई. ● मूल्य 3.50 रुपया ● मार्गशीर्ष 4, शक 1922/ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष 14, विक्रम 2057



आखिरी पन्ना
- दिल्ली का दिल जीता
- अंगना में आई बहार



खेल
- इंडीज पर हार का खतरा
- एसीसी की अपील



संपादकीय
- मुखौटे और छाया-युद्ध
- रमजानी भाई अटल बिहारी जी



आर्थिक
- टोयोटा का नया वाहन
- वाणिज्यिक वाहनों की...

मल्लेश्वरी को 6 लाख का पुरस्कार

वार्ता

नेपाल में मदरसे भारत विरोधी गतिविधि के केन्द्र

झामुमो नेता की हत्या

बंदी विधायकों के कार्यक्रमों

हिन्दुस्तान

मिथिलांचल का पिछड़ापन बनाम मिथिला राज्य की मांग

मिथिला तो शुरू से ही स्वतंत्र इकाई रही है : अमर



दो-दो बार साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' कहते हैं कि मिथिला को अलग राज्य का दर्जा तभी मिल जाना चाहिए था जब बंगाल से बिहार अलग हो रहा था। दरभंगा राज की गद्दी पर बैठे रमेश्वर सिंह यदि मिथिला को बिहार में समाहित किये जाने के विरोध में खड़े होते तो मिथिला राज्य संभवतः उसी समय बन जाता। मिथिलाराज्य के गठन का दूसरा मौका तब था जब बिहार से उड़ीसा को अलग किया गया। उस समय कामेश्वर सिंह दरभंगा राज की गद्दी पर थे। लेकिन रमेश्वर सिंह और कामेश्वर सिंह, दोनों चूंकि ब्रिटिश हुकूमत के अनुगामी थे, इसलिए उन्होंने जो हुआ उसे होने दिया। हां, बंगाल से बिहार के अलग होते समय महामहोपाध्याय मुरलीधर झा ने 'मिथिला मोद' में अलग मिथिला राज्य नहीं बनाए जाने का विरोध किया था। ऐसी ही आवाज बेतिया के त्रिलोचन झा ने भी उठाई थी। लेकिन जब दरभंगा राज ही मूकदर्शक बना रह गया तो उन दोनों के विरोध का स्वर कहां तक असरदार हो पाता?

साहित्य अकादमी पुरस्कार के अलावा बिहार सरकार, के राजभाषा विभाग से विद्यापति पुरस्कार और अखिल भारतीय संस्कार भारती से त्रयोदश कला साधक सम्मान पा चुके श्री उमर ने 'हिन्दुस्तान' के साथ एक विशेष भेंट में कहा कि मिथिला, मगध और झारखंड तीनों की संस्कृतियों की खिचड़ी कर बिहार राज्य का गठन किया गया। इनमें से झारखंड को जब अलग राज्य बनाया गया तो उचित था कि मिथिला और मगध को भी पृथक कर दिया जाता। ऐसा नहीं किये जाने के चलते फिर से झंझट खड़ा होने लगा है। हालांकि श्री अमर को नहीं लगता कि छोटे राज्य बना देने से विकास तेज होगा। लेकिन उनका कहना है कि मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य में जिस आधार पर छोटे राज्य बनाए जा रहे हैं, उसमें उचित यही था कि बिहार को झारखंड समेत तीन खंडों में विभक्त कर दिया जाए।

बातचीत को मिथिला पर केन्द्रित करते हुए श्री अमर बताते हैं कि आज से नहीं, उपनिषद काल से ही मिथिला अपने आप में स्वतंत्र इकाई रही है। उसकी संस्कृति, भाषा, लिपि- सबकी इतिहास में अपनी भिन्न पहचान रही है। जनक ने कहा है कि मिथिलायां प्रदीप्तायां, न मे दहति किंचन। फिर भी इसे बिहार की खिचड़ी संस्कृति में मिला देना दुखद है।

मैथिली साहित्य को कविता, कहानी, उपन्यास, एकांकी, विनिबंध के साथ-साथ अनुवाद से भी समृद्ध करने में लगे श्री अमर मिथिलावासियों की 'भेड़ियाधसान' चाल और जन प्रतिनिधियों की घोर उपेक्षा को मिथिला के पिछड़ेपन की सबसे बड़ी वजह मानते हैं। क्षेत्र की दुर्दशा का ही नतीजा है कि रोजगार की तलाश में लोग महानगरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इस क्रम में जो जिस दिशा में गए, वे वहीं के होकर रह गये। अपना गांव-घर उन्होंने 'बिसरा' दिया। इससे बदहाली और बढ़ती चली गयी। इसी क्रम में वे मैथिली की उपेक्षा की भी चर्चा करते हैं और बताते हैं कि इस भाषा को उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में ही भारतीय भाषाओं में आठवां स्थान दिया गया था। आधुनिक आर्यभाषाओं में सबसे पहले मैथिली में ही गद्य ग्रंथ उपलब्ध है। बावजूद इसके मैथिली को वह सम्मान, अधिकार अब तक नहीं मिल पाया है, जिसकी वह हकदार है।

मुद्दे की बात

श्री अमर को हंसी आती है उन लोगों पर जो कहते हैं कि झारखंड के अलग होने से शेष बिहार में बाढ़ और बालू के सिवा कुछ नहीं बचा। उन्होंने कहा कि खनिज संपदा भले झारखंड में चली गयी हो, पर उद्भिज संपदा मिथिला के पास ही है। और उद्भिज संपदा खनिज संपदा से ज्यादा मूल्यवान होती है क्योंकि उससे हर साल उपलब्धि हासिल होती है। खनिज संपदा के साथ ऐसी बात नहीं है। उन्होंने कहा कि मिथिला की माटी साल में तीन बार फसल उगाती है। यहां सामान्य अन्न का उत्पादन तो होता ही है, नगदी फसल भी खूब होती है। आवश्यकता है बस जल प्रबंधन कर बाढ़ को नियंत्रित करने की। उन्होंने कहा कि इसके लिए मरने कमला धार की उड़ाही कर सबको एक दूसरे से जोड़ दिया जाय तो बाढ़ नियंत्रित हो सकती है। ऐसा करने पर तटबंध की भी आवश्यकता नहीं रह जाएगी।

प्रस्तुति : सतीश कुमार सिंह

अमरजीको साहित्य अकादमी-पुरस्कार

नयी दिल्ली, ६ जनवरी (भारती)। हिन्दीके यशस्वी विवंगत कवि श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना सहित इक्कीस भाषाओंके सुप्रसिद्ध रचनाकारों को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

साहित्य अकादमीके अध्यक्ष प्रोफेसर विनायक कृष्ण गोकक की अध्यक्षतामें कार्य समितिकी आज यहां सामान्य बैठकमें इन साहित्यकारोंको पुरस्कृत करनेका अंतिम निर्णय किया गया। इन साहित्यकारोंको पुरस्कारस्वरुप १० हजार रुपये की राशि का एक चेक तथा प्रशस्ति पत्र विशेष समारोहमें प्रदान किया जायगा।

मैथिलीमें इस वर्ष प्रसिद्ध कवि श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमरको 'मैथिली पत्रकारिता इतिहास' नामक पुस्तक पर यह पुरस्कार प्रदान किया गया है। श्री सक्सेनाको उनके काव्य संकलन 'खूटियोंपर टगे लोग' के लिए यह पुरस्कार दिया गया है।

पुरस्कृत साहित्यकारोंके नाम हैं – असमीमें श्री निर्मल प्रभा बार्दोलोई, बंगला– शक्ति चटटोपाध्याय डोगरी– वेदराही, अंग्रेजी– निसीम इजीक्येल, गुजराती– सुरेश जोशी; कन्नड़– यशवंत चित्तल, कोंकणी– दामोदर मौजों मलयालम– एस० गुप्तन नायर, मणिपुरी– एन डबोहो सिंह, मराठी– व्यंकटेश माडलूकर; नेपाली– इन्द्र सुन्दास, उड़िया– हरेकृष्ण मेहताब, पंजाबी– प्रीतम सिंह सफीर, राजस्थानी– मोहन आलोक, संस्कृत– पंडारी नाथाचार्य गलगली, सिंधी– अर्जुन शाद, तमिल–टी० एम० सी० रघुनाथन तेलगू– आर० भारद्वाज तथा उर्दू–

Scanned by CamScanner